

### विचार बिन्दु

जीवन एक फूल है और प्रेम उसका मधु। –ह्यूगो

# वसंत में वनानुभव

एकाग्र मन से ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों का प्रयोग कर वनों की समग्रता का अनुभव (देखना, सुनना, सूंघना, स्पर्श करना, स्वाद लेना) वनानुभव कहलाता है। चरकसंहिता में वसंत की आरोग्यदायी ऋतुचर्चा का वर्णन करते समय भगवान आत्रेय ने वसंत में वनानुभव का महत्त्व स्पष्ट किया है (च.सू.6.22-26, अंश ): वसन्तेऽनुभवेत्काननानांयौवनम्॥ तात्पर्य यह है कि उद्यानों एवं वनों में घूमना, पैदल चलना, पुष्पित पल्लवित वनों का अनुभव लेना चाहिए। प्रकृति-अनुभव और वनानुभव चिकित्सा का इतिहास बहुत प्राचीन है। यह आयुर्वेद की एक श्रेष्ठ गैर-औषधीय चिकित्सा है जिस पर समकालीन शोध भी पुष्ट करता है। हरियाली, प्राकृतिक वातावरण, वनों और उपवनों में प्रकृति-अनुभव या दीर्घकालिक जुड़ाव का प्रसन्नता में योगदान पर पूर्व में यहाँ प्रमाण-आधारित ठोस विश्लेषण प्रस्तुत किया गया था। परन्तु क्या यह हरियाली में किया गया व्यायाम और योग तुलनात्मक रूप से बेहतर स्वास्थ्य भी प्रदान करता है? वर्ष 2023 के प्रारंभ में आज तक प्रकाशित शोध को समाहित कर आज की चर्चा पुनः इसी विषय पर है।

संहिताओं में स्वास्थ्य-रक्षण और रोगोपकार दोनों के लिये ऐसे अनेक सन्दर्भ हैं (देखें, च.चि.3.260-266; च.चि.2/3, 26-30, च.चि.4.106-109; च.चि.6.17, सु.उ.३.47.55-57 आदि)। उक्त सभी सन्दर्भ केवल उदाहरणार्थ और प्राचीनता दर्शित करने के उद्देश्य से उद्धृत किये गये हैं। समकालीन शोध में पिछले कई दशकों से विभिन्न विषयों के विद्वानों ने अपनी विधा के अनुसार इस बात की ओर ध्यान खींचा है कि प्रकृति से जुड़ने और मानव स्वास्थ्य में सुधार के बीच सकारात्मक संबंध है। यह आम समझ की बात है कि प्रकृति और पर्यावरण के सानिध्य में समय बिताना हमारे लिये स्वाभाविक रूप से अच्छा हो सकता है। प्राचीन सभ्यताओं के अन्वेषों, प्राचीनकाल से चली आ रही सांस्कृतिक परम्पराओं और चिकित्सा पद्धतियों में इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि मानव सभ्यता का अपने स्वास्थ्य, चिकित्सा और आध्यात्मिकता के लिये प्रकृति के साथ अन्योन्याश्रित जुड़ाव रहा है।

जहाँ तक हरियाली का शारीरिक और मनोरोगों को रोकने में योगदान है उस पर बहुत शोध है और उसका सम्पूर्ण विश्लेषण यहाँ देना संभव नहीं है। इस विषय में एक बेहद उपयोगी पुस्तक “द एक्सपीरियेंस ऑफ़ नेचर-अ साइकोलॉजिकल पर्सपेक्टिव” वर्ष 1989 में प्रकाशित हुई थी। राबेल्कपलान और स्टेफेनकपलान की यह पुस्तक इस विषय में विश्व की सर्वोच्च संदर्भित पुस्तक है जिसे लगभग 8000 प्रकाशनों में संदर्भित किया गया है। प्राकृतिक वातावरण, लोगों और उनके बीच के संबंधों का एक प्रमाण-आधारित लेखा-जोखा इस पुस्तक में है। लेखकों ने यह समझने की कोशिश की है कि लोग प्रकृति का अनुभव कैसे करते हैं और वे किस प्रकार के प्राकृतिक वातावरण पसंद करते हैं, वे जंगल के अनुभवों से क्या नवीवैज्ञानिक लाभ उठाते हैं, और हमारे आसपास के उद्यान लोगों के लिये क्यों महत्वपूर्ण हैं। इस विषय में अद्यतन स्थिति को 832 अध्ययनों के आधार पर की गई 16 मेटा-एनालिसिस को मिलाकर जो एक भारी मेटा-एनालिसिस विश्व में अब तक का श्रेष्ठ प्रमाण भी यहाँ निष्कर्ष देता है (देखें, सी. बरगान-जैसन इत्यादि, बायोलॉजिकल कंसर्वेशन, 277, 109842, 2023))। वर्ष 2022 में 8 मेटा-एनालिसिस अतिरिक्त प्रमाण प्रदान करती हैं कि वनानुभव शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर करता है। बच्चों के कल्याण के लिए भी वनानुभव व प्रकृति-अनुभव आवश्यक है (देखें, टी. अरोला इत्यादि, जर्नल ऑफ़ एनवायर्नमेंटल साइकोलॉजी, 85,101913, 2023))।

यहाँ यह बताना आवश्यक है कि ऐसा नहीं है कि प्रकृति के सभी आयाम स्वास्थ्यवर्धक और सुरक्षित ही हों। कई प्राकृतिक स्थल मानव में अकेले डर पैदा कर सकते हैं। जो हवा, पानी और मिट्टी स्वास्थ्य के लिये सर्वथा उपयुक्त होती हैं, वहीं प्रदूषित होने या प्राकृतिक आपदाओं के स्वरूप में आने पर स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हो सकती हैं। प्राकृतिक वातावरण के जो प्राणी बहुत सुन्दर लगते हैं उनमें से बहुत हिंसक भी हो सकते हैं। इन बातों को ध्यान में रखते हुये प्रकृति-अनुभव अपने अन्य रूपों में हमारे स्वास्थ्य की स्थिति को निर्धारित करते हैं। इस दृष्टिकोण से प्रकृति और पर्यावरण को निहारना, प्राकृतिक वातावरण में घूमना-फिरना स्वास्थ्यकर हो सकता है।

प्रकृति-अनुभव किन कारणों से हमारे स्वास्थ्य पर प्रभाव डालता है? या अन्य शब्दों में कहें तो प्रकृति से जुड़ाव के स्वास्थ्यकर होने की मैकेनिज्म ऑफ़ एक्शन क्या है? अनेक अध्ययनों के प्रमाण स्पष्ट करते हैं कि प्रकृति का मानव शरीर और मन पर स्वास्थ्यकर प्रभाव स्वास्थ्य के विविध आयामों को बेहतर करने में प्राकृतिक वातावरणों की भूमिका के कारण होता है। उदाहरण के लिये प्रकृति-अनुभव से स्वास्थ्य में सुधार की मैकेनिज्म ऑफ़ एक्शन को मानसिक तनाव, चिंता और अवसाद में कमी, मन की प्रसन्नता में बढ़ोतरी, अच्छीनिद्रा, मनमोहरी अनुभूति, दर्द-निवृण्ण, बेहतर सामाजिक संपर्क, व्यायाम में बढ़ोतरी, हृदय रोगों में कमी, प्रतिरक्षा तंत्र में सुधार आदि के प्रकाश में देखा जा सकता है। वनानुभव-चिकित्सा (वनों में घूम-फिर कर प्रकृति का अनुभव करना) इन्प्यूनिटी भी बढाती है (देखें, वाय. जे इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एनवायर्नमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 18(16), 2021))।

शहरों में हरियाली से स्वास्थ्य लाभ के बारे में वर्ष 1800 के बाद से कई छिटपुट अध्ययन मिलते हैं और शहरी विकास में इन्हें शामिल करने के प्रयास भी दुनिया भर में हुये हैं। इन सब अध्ययनों में एक सन्देश मिल रहा था कि हरियाली को अनुभूत करना या हरियाली का एक्सपोज़र स्वास्थ्य के लिये लाभकारी है, परन्तु व्यवस्थित समीक्षा और मेटा-एनालिसिस अब आना शुरू हुये हैं। हाल ही में हरियाली से मिलाने वाले लगभग 100 प्रकार के स्वास्थ्य-लाभ के निष्कर्षों वाले 143 अध्ययनों को शामिल कर एक मेटा-एनालिसिस की गयी। इससे कई रोचक परिणाम मिले। जैसे-जैसे हरियाली के साथ जुड़ाव बढ़ा वैसे वैसे लार के कोर्टिसोल, हृदय गति, व डायस्टोलिक रक्तचाप में कमी पायी गयी। एचडीएल कोलेस्ट्रॉल व हृदय गति की परिवर्तनशीलता में बेहदरी हुई। समय-पूर्व प्रसव-जोखिम, मधुमेह, तथा समस्त-कारण मृत्यु दर (आल-कॉजमोर्टैलिटी) और

**हाल ही में हरियाली से मिलाने वाले लगभग 100 प्रकार के स्वास्थ्य-लाभ के निष्कर्षों वाले 143 अध्ययनों को शामिल कर एक मेटा-एनालिसिस की गयी। इससे कई रोचक परिणाम मिले। जैसे-जैसे हरियाली के साथ जुड़ाव बढ़ा वैसे-वैसे लार के कोर्टिसोल, हृदय गति, व डायस्टोलिक रक्तचाप में कमी पायी गयी। समय-पूर्व प्रसव-जोखिम, मधुमेह, तथा समस्त-कारण मृत्यु दर (आल-कॉजमोर्टैलिटी) और हृदय रोग मृत्यु दर में भी कमी पाई गयी। स्ट्रोक, उच्च रक्तचाप, डिस्लिपीडेमिया, अस्थमा, और कोरोनरी हृदय रोग की घटनाओं में भी कमी होती गयी।**

अध्ययनों से प्राप्त प्रमाणों की इस बात के लिये समीक्षा की गयी कि हरियाली, पारस्व, गार्डन्स आदि की अनुत्थता का सकल मृत्यु दर में प्रभाव क्या है। इस मेटा-एनालिसिस में प्रारम्भ में ९298 अध्ययन और 13 अन्य अध्ययनों की पहचान की गयी। इनमें से ९234 (99प्रतिशत) अध्ययनों की शीर्षक और सारांश जांचने के बाद अपन करते हुये शेष 77 अध्ययनों से 68 (88प्रतिशत) को सम्मिलित किया गया। उक्त के साथ ही मात्रात्मक मूल्यांकन हेतु नौ (12प्रतिशत) अध्ययनों को शामिल किया। इनमें सात देशों के 8.32 लाख व्यक्ति शामिल थे। कुल मिलाकर निष्कर्ष स्पष्ट करते हैं कि आसपास की हरियाली और सकल-कारण मृत्यु दर के बीच एक व्युत्क्रम रिश्ते का प्रमाण पाया गया। कहने का तात्पर्य यह कि जैसे-जैसे हरियाली की उपस्थिति बढ़ती जाती है वैसे-वैसे सभी कारणों से मृत्यु दर में कमी होती जाती है। सन्देश यह है कि मानव समाज जहाँ रहता और काम करता है वहां हरियाली बढ़ाने और वैव-विविधता संरक्षण को बढ़ावा देना मानव स्वास्थ्य के लिये बहुत उपयोगी है (देखें, डी. रोससरुड़ा आदि, द लैसेटप्लेनेटरी हेल्थ, 3,11:ई469-ई477,2019)।

एक अन्य महत्वपूर्ण मेटा-एनालिसिस में बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न पर जांच की गयी कि गर्भावस्था मंज प्रतिकूल परिणामों पर आवासीय हरियाली का क्या प्रभाव रहता है। इसमें कुल 36 अध्ययन शामिल थे और कुल मिलाकर 1.19 करोड़ (1.19 मिलियन) प्रतिभागी थे। परिणाम स्पष्ट करते हैं कि हरियाली वाले स्थलों में जन्म के समय न्युट्राम वजन का जोखिम उच्च स्तर की हरियाली वाले समूह में काफी कम था। गर्भावधि उग्र कम रहने की संभावना भी उच्च हरियाली वाले क्षेत्रों में घटी पायी गयी। इसके अलावा अधिक हरियाली वाले क्षेत्रों में मातृ-जोखिम कम पाया गया और मानसिक विकारों में भी कमी पायी गयी। यह समीक्षा आवासीय हरियाली और गर्भावस्था के प्रतिकूल परिणामों के बीच एक उलटे रिश्ता होने की पुष्टि करती है। अध्ययन के निष्कर्ष स्पष्ट कर देते हैं कि हरियाली गर्भवती महिलाओं के लिये जोखिम घटाती है (वाइ. झान आदि, साईंसेऑफ़ द टोटल एनवायरनमेंट, 718: आर्ट. 137420, 2020)। हाल ही में वनानुभव को मानसिक स्वास्थ्य में बेहदरी लाने के ठोस प्रमाण मेटा-एनालिसिस से प्राप्त हुए हैं (देखें, वाई. कोटेरा इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मेनटल हेल्थ एंड एडिक्शन, 20(1):337-361, 2022)। एक अन्य मेटा-एनालिसिस से सिद्ध होता है कि वनानुभव अवसाद व चिंता से बचाने हेतु श्रेष्ठ गैर-औषधीय युक्ति है (पी.एस. येओन इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एनवायर्नमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 18(23): 2021))। रैंडमाइज्ड कंट्रोल्ड ट्रायलस की मेटा-एनालिसिस का निष्कर्ष भी स्पष्ट करते हैं कि वन-आधारित गैर-औषधीय चिकित्सकीय दखल मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करते हैं (देखें, एम.जे. कांग इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नलऑफ़एनवायर्नमेंटलरिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 19(8): 2022)। हाल ही में 52 अध्ययनों में समाहित 5.2 मिलियन लोगों के आंकड़ों को लेकर की गई मेटा-एनालिसिस सिद्ध करती है कि ग्रीन-स्पेस के आसपास रहने वाले लोगों में डायस्टोलिक और सिस्टोलिक ब्लडप्रेसर में सुधार होता है (देखें, वाई. झाओ इत्यादि, साईंस ऑफ़ द टोटल एनवायरनमेंट, 817: 152513,2022)

हमारा समाज आज शहरीकरण, संघर्षान-विरोधन और जीवनशैली में बदलाव के कारण प्रकृति-उन्मुखता से प्रकृति-विमुखता की ओर जा रहा है। संहिताओं, शोध और अनुभव की त्रिवेणी से उत्पन्न ज्ञान इस बात के पुष्टता प्रमाण दर्शित करता है कि प्रकृति-अनुभव मानव स्वास्थ्य के लिये अनिवार्य है। शोध स्पष्ट करती है कि प्रकृति-अनुभव से स्वास्थ्य-लाभ के मूल में वायु गुणवत्ता, शारीरिक गतिविधि और व्यायाम, सामाजिक सामंजस्य और तनाव में कमी आदि कारक हैं।

इस तमाम चर्चा का मूल संदेश यह है कि पर्यावरण के साथ हमारे संबंध हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करते हैं। वनानुभव और प्रकृति-अनुभव अनेक रूपों में हो सकता है। हमारे आसपास हरियाली को बढ़ावा देना, वनों उपवनों में घूमना, प्राकृतिक स्थलों में सैर-सपाटा, प्रतिदिन समीपवर्ती बाग-बगीचों में जाकर कम से कम एक घंटे का समय बिताना, कार्य-स्थलों में हरियाली बढ़ाने के लिये छोटे-छोटे गार्ड नया बगीची विकसित करना, बैठने के स्थान में रिडकी से दिखाने वाला हरा-भरा दृश्य, कार्यालय में पंच मिनट का ब्रेक लेकर हरियाली में टहल कर आना आदि सब छोटे-छोटे ऐसे कार्य हैं, जिनके माध्यम से हमारा प्रकृति के साथ जुड़ाव बना रहता है। इन सबमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह याद रखने योग्य है कि चूँकि प्रतिदिन व्यायाम और योग करना स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है अतः व्यायाम और योग वनों, हरे-परे स्थलों, बाग-बगीची, नदी या झील के समीप किया जाये तो शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य के लिये अधिक उपयोगी है। बच्चों को भी वनानुभव और प्रकृति-अनुभव कराइये। हरियाली से जुड़ाव बच्चों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए परम आवश्यक है। जीवन के प्रारम्भिक काल में प्रकृति से जुड़ाव मानव और प्रकृति के मध्य आजीवन सार्थक रिश्ता बनाने हेतु आवश्यक है। प्रकृति के साथ जुड़े रहिये। योग और व्यायाम कीजिये। आनंदित रहिये। स्वस्थ रहिये।

—अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
( भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंगप्रोफेसर )
( यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं )



महावीर सिंह

मॉर्निंग वर्क्स के ग्रुप् में हुए गंभीर व मजाकिया अंदाज में हुए रोचक संवादों पर आधारित है यह लेखा दिमाग में भार लेने की कतई आवश्यकता नहीं, मुस्कराते रहिए। चर्चा पूरे जोर शोर से हो रही थी कि कौन राष्ट्र प्रेमी, राष्ट्र भक्त, राष्ट्रवादी, सच्चा सनातनी और कौन गद्दार? समूह के सबसे उम्र दराज व्यक्ति में कहा कि देश में जब तक हर आदमी ईमानदारी से अपना काम करता है, सभी देश प्रेमी है। लेकिन युवा साथी उनसे सहमत नजर नहीं आए। उन में से एक ने कहा बाहरी तौर पर तो सभी अपना अपना काम ठीक ठाक करते दिखते है लेकिन दिलों से देश के खिलाफ काम करते रहते है। आखिर उनकी बहसबाजी में वह बात निकल ही आई कि अत्यंत अल्प संख्या में कुछ लोग एक धर्म विशेष के लोगों की देश भक्ति हमेशा संदिग्ध बताते रहते है।ग्रुप के ज्यादातर समझदार लोग उनकी बात से असहमत नजर आए। उस उम्र दराज बुजुर्ग में फिर समझाने का प्रयास किया कि सारे नागरिक देश प्रेमी है। हमें किसी की राष्ट्र भक्ति को साधते पकड़े जाते है और अधिकार नहीं। अगर किसी की कोई गतिविधियां देश विरोधी लगती है तो देश की सरकार है, कानून है, इस पर कार्यवाही करने के लिए किसी धर्म विशेष के सारे लोगों के लिए यों कहना पूर्णतः अनुचित है। बहुत सारे हिंदू दूसरे देश के हितों को साधते पकड़े जाते है और ऐसा ही मुस्लिम धर्म में भी है।यह व्यक्ति विशेष से जुड़े मानते है । ऐसे कतिपय उदाहरणों के आधार पर किसी पूरे धर्म के लोगों पर ऐसी तोहमत लगाना ठीक नहीं। यह देश को साझा संस्कृति के भी विपरित है।

एक कुछ जानकार से लगने वाले ने भी कहा, देखो, सुरक्षा एजेंसियां

समय-समय पाकिस्तानी जासूसी एजेंसी के लिए और अन्य प्रतिबंधित संगठनों के लिए काम करते हुए मुस्लिम, हिंदू दोनों समुदायों के संदिग्धों को पकड़ती आई है। देशभक्ति तो धर्म से भिन्न है, राष्ट्र के प्रति निष्ठा है। जो कोई राष्ट्र की संप्रभुता और अखंडता को खतरा नहीं पहुंचता वह देश भक्त है और जो इन्हें खतरा पहुंचता है वह राष्ट्र द्रोही है चाहे किसी मजहब को मानता हो। लेकिन ग्रुप के कुछ जोर से बोलने वाले सदस्य इस से संतुष्ट नहीं दिखे। उनका मानना था कि देश भक्ति हर व्यक्ति के व्यवहार,

आचरण में दिखे, इसके कुछ मोटे-मोटे पैमाने तो होने ही चाहिए। बात चली की क्या टेस्ट होने चाहिए। एक अति उत्साही नौजवान बंद बोला देखो कुछ साधारण साधारण प्रश्न पूछो हां या नो में उत्तर लो। इनके आधार पर उस बंदे को राष्ट्रवादी आदि के टेस्ट में पास अथवा फेल मानो।वैसे तो टेस्ट केवल गैर हिंदुओं के लिए ही होगा किंतु कुछ सिरफिरे हिंदुओं का भी टेस्ट लेना जरूरी है जो आए दिन सनातन और परम पूज्य धर्माचार्यों के विरुद्ध जहर उगलते रहते है। उस बुजुर्ग सदस्य ने फिर समझाने का प्रयास किया ---क्यों फालतू की माथापच्ची कर रहे हो।यह काम तो बहुत से अखबारों व टीवी चैनल्स के लिए संवाद तैयार करने वाले लोग और एंकर्स आदि बखूबी कर रहे है। क्या जरूरत है यह सब करने की कुछ विशेष टीवी चैनल्स सुन लिया करो, भरपूर हास्य भी होगा और जो सामग्री चाहते हो वैसे चटपटी सामग्री खूब मिल जाएगी। अधिकतर युवाओं ने उसकी बात को अनुसुना कर दिया। उन अति उत्साही लोगों ने, देश प्रेमी, राष्ट्रवादी होने या न होना को टेस्ट का प्रश्न पत्र यों तय किया गया:--

1. हिंदुओं को चार बच्चे पैदा करना लाजमी किया जाए और जो नहीं करते उन्हें आर्थिक रूप से, सरकारी सहूलियत वॉफ़िस लेकर दंडित किया जाए। जो इस से तत्काल सहमत हो वे ही सच्चे हिन्दु, सनातनी है।
उस बंदे में जोर देकर कहा कि कुछ बड़े धर्माचार्य, कुछ राष्ट्रीय - अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के सर्वेसांर्य एसो करना सनातन बचाने के लिए जरूरी मानते हैं। विश्व के एक बड़े संगठन के मालिक न थोड़ी रियायत देकर संख्या तनी भी मान्य करनी है। किसी ने पूछ लिया यह सभी पक्षों के लिए एक समान होगा या अलग-अलग

3. पाकिस्तान मुद्राबाद का नारा भी लगवाया जा सकता है। बोले तो पास करना हर टाइन पुलिस में क्यों जाना तत्काल मौके पर ही कुछ जोर आजमाइश कर डालो!!!!
4. यह पूछ लिया जाए कि जो राम जादे नहीं उन हरामजादों को पाकिस्तान जाना चाहिए या नहीं? जो इस से सहमत हो वे देश प्रेमी, राष्ट्रवादी वरना तुम सच्चे देश भक्तों की तरह से मौके पर ही कुछ भौंदादारी कर डालो बशर्ते ऊपर के संरक्षकों की मौन सहमति हो। उनमें से एक बोल पड़ा, यारो रामजादे, हरामजादे का मतलब क्या है? समझाओ तो सही, मुझे ही नहीं पता??

5. कुछ तथाकथित हिंदू भी गैर सनातनी काम करते है। शास्त्रों के अनुसार जिस वर्ण का जो काम है उससे हट के उच्च वर्ण वालों का काम करने लग जाते है, जैसे धार्मिक कथा वाचन तो वे भी 100 प्रतिशत हिंदू निष्ठा वाले नहीं। ऐसा करने वाले समझाने पर समझ जाएं और केवल उनके लिए शास्त्रों में निर्धारित कर्म ही करे तो ठीक वरना मौके पर ही हल्की-फुल्की पुलिसिया कार्यवाही कर मनवा डालों। इस प्रकार

की स्थानीय जोर आजमाइश को जायज मानने वाले सारे सनातनी और नहीं मान ने वालों को हराम जादे वाली श्रेणी में रख दो।

6. धार्मिक सेनाओं द्वारा गौतस्करों के साथ मार पीटाई, लिंचिंग आदि, स्वरेष्मण से धर्म की रक्षा व च्वजा ऊंचा रखने वाली कोई भी स्थानीय स्तर की पुलिसिया कार्यवाही वाला काम अपराध नहीं माना जाए। जो सहमत हो वे सनातनी है बाकी संदिग्ध निष्ठा वाले हिंदू।

7. जो हिंदू लड़की मुस्लिम लड़के से प्यार का इजहार करे, शादी करे, उसके माता-पिता को हिंदू धर्म से बहिष्कृत करना देश प्रेम की पहचान होगी। जो इस से सहमत है वही सच्चे हिन्दू है।मुस्लिम लड़के और उससे परिवार वालों के विरुद्ध स्थानीय धर्म सेना को बुलडोजर टाइप एक्सन की युरी छूट हो!!!! जो मुसलमान लव जिहाद को हिंदू धर्म विरोधी कृत्य मानते हो तो ठीक अन्यथा देश भक्त श्रेणी से बाहर। ऐसे लोगों को मौके पर ही सबक सिखाओ।पुलिसिया कार्यवाही में तो वच्चों लगते हैं और तब तक तो पता नहीं, विधर्मी कितने लव जिहाद कर डालें!!!!

8. कुछ और मानक भी है सच्चे देश भक्त प्रमाण पत्र के लिए यथा हलाल प्रोडक्ट्स का बहिष्कार करना देश भक्ति है और ऐसी वस्तुओं के उत्पादक को देश द्रोही मानें जाऐ। एक ने दबी जवान में कहा यह थोड़ा ज्यादा नहीं हो जाएगा, निर्यातकों को कुछ छूट होनी ठीक लगती है, वे लोग देश के लिए ही तो कमाते है!!

9. कैफ़े, होटल्स आदि में महिलाएं भड़काऊ कपड़े पहन कर नहीं जाएं,यह हिदायत,परमान देना, पाकिस्तानी उत्पादों का बहिष्कार, हिंदू संगठनों के व्हाट्सएप पोस्ट्स को बिना देरी दूसरे टाग्स में तुरंत फॉरवर्ड करना आदि काम करने वालों को उच्च श्रेणी हिंदू का सम्मान देना चाहिए।कुछ धर्माचार्यों द्वारा सुझाएनए अनुश्रानों को तत्काल पूर्णनिष्ठा से स्वीकार करना भी सच्चे सनातनी का काम है,जैसे “दिव्य स्नाना गर्भधारण संस्कार” को नया नया है, जन्म से लेकर अत्येष्टि तक के पहले प्रचलित 16 संस्कारों के अतिरिक्त नया है।

अंत में फिर हिम्मत करे उस बुजुर्ग ने और पूछा कि यह टेस्ट लेना कौन? किसी ने कहा गांव मोहल्ला स्तर पर 100 प्रतिशत कट्टर सनातनियों की कमेटी बनाई जाए और वह टेस्ट ले और

# सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों की जिंदगी सस्ती नहीं है



राजेन्द्र जोशी

पिछले लंबे समय से जर्जर होते स्कूल भवन गिर रहे हैं। उसके बाद उसकी जांच शुरू होती है। मामला माननीय न्यायालय तक जाता है। और फिर सभी जर्जर भवनों की पहचान और सर्वे प्रारंभ होता है। परंतु राजकीय भवनों के रखरखाव की कार्य योजना धरातल पर नजर नहीं आती, तीन दशक पहले तक सरकारी विद्यालयों का उजला पक्ष रहा है। राजकीय विद्यालय जो कि सरस्वती के मंदिर है सरकारी जिम्मेदारी में शिक्षा और स्वास्थ्य दोनों प्राथमिकता से होना चाहिए। सरकारी विद्यालयों का वातावरण आनंदमयी होना चाहिए। देश में सरकार और निजी क्षेत्र

की शिक्षा व्यवस्था का नियंत्रण सरकार के पास है ऐसे में जितनी जिम्मेदारी निजी क्षेत्र की है, उससे अधिक जिम्मेदारी सरकार की होनी चाहिए। और सरकारी विद्यालयों की देखरेख के लिए सरकार के पास पूरा लवाजमा मौजूद है।

स्कूल नियमों से संचालित होते है। निजी क्षेत्र में संचालित होने वाले शिक्षण संस्थाओं को उल्टा क्यो बताया जाता है। जबकी सरकारी विद्यालय में धन अधिक खर्च होता है लेकिन उनका मूल्यांकन ही नहीं किया जाता। निजी क्षेत्र के स्कूल प्रबंधन को सरकार मान्यता देती है, मान्यता के लिए सरकार द्वारा नियमावली बनाई गई है।

स्कूल नियमों के अनुसार निजी विद्यालय नहीं चले तो उनकी मान्यता रद्द करने का प्रावधान किया गया है। उनका भवन, उनकी पद्धति और सरकार के बने हुए नियमों के अनुरूप किसी भी स्कूल को होना अनिवार्य होता है। और होना भी चाहिए। आधिकारक बच्चों का और देश के भविष्य का सवाल है। कायदा प्रत्येक स्कूल पर लागू होना चाहिए।

स्कूल सरकार भी खोलती है। यहां सवाल यह उठता है कि आखिर सरकारी स्कूल के संचालन को नियमों से चलाने की जिम्मेदारी किसकी है? क्या सरकार स्कूल खोलते वक्त नियमों का पालन करती है। सरकारी

स्कूल में भी देश के बच्चे पढ़ने जाते हैं। फिर दोहरे मापदंड क्यों? सरकार में पढ़ने वाले बच्चों की जिंदगी सस्ती नहीं है। अथवा उनकी जिंदगी की कोई कीमत नहीं है। और निजी विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों की हिफाजत की सरकार को चिंता होना स्वागत होय है। ऐसे में सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों की चिंता कौन करेगा। यह शिक्षा विभाग को जवाब देना पड़ेगा। वह तो अपनी लापरवाही पर आंसू भी नहीं बहा सकते।

होना यह चाहिए कि साधन-सम्पन्न सरकार सरकारी विद्यालयों को नियमों से संचालित करे। खुद के बनाए हुए नियम अपनी स्कूलों पर लागू क्यों नहीं करना चाहती सरकार। इस पर सरकार के लिए नियंत्रण में नहीं है। स्कूल भवन सुरक्षित हो, समय-समय पर उनकी देखभाल होनी चाहिए। सरकारी स्कूल भवन के देखभाल की जिम्मेदारी ग्राम पंचायत स्तर पर निर्धारित हो।

सरकार को विकेंद्रीकरण की दृष्टि से काम करना होगा। प्रशासनिक दृष्टि से ग्राम पंचायत सबसे छोटी इकाई रूप में कार्यरत रही है। ग्राम पंचायत क्षेत्र में जिला परिषदों द्वारा धन उपलब्ध कराया जाता है, जिसका उपयोग कल्याणकारी कार्यों में किया जाता है। होना यह चाहिए कि ग्राम

पंचायत स्तर पर प्राथमिकताएं निर्धारित कि जाए। सरकारी स्कूल भवन सुरक्षित नहीं रहेंगे तो बार-बार सरकारी स्कूलों की छत गिरेगी। मासूम बच्चे या तो दब जाते हैं और फिर उनकी जान तक चली जाती है।

उस समय स्पष्ट रूप से सरकार का सिस्टम फल दिखाई देता है, दबे हुए बच्चों को निकालते और जर्जर स्कूलों की तस्वीर समाचार पत्रों में प्रकाशित होती है। वह तस्वीर खुद बोलती हुई पाठक के पास अपना दर्द बयां करती है।

सरकार के कान में जूं तक नहीं रेंगती , वैसे भी शिक्षा में राजनीति अधिक होती है और जब-जब भी स्कूल भवन जर्जर होते हुए गिरते है,अनेक बार एक नौचे दबकर मर भी जाते हैं। हादसा बड़ा होता है तो सरकार में बैठी सत्ता की पार्टी विपक्षी पार्टी को कोसने लगती है। आरोप-प्रत्यारोप शुरू होता है। ऐसी घटनाओं से सबक लेकर भविष्य में ऐसी घटनाएं न हो इस पर विचार प्रारंभ होना चाहिए। इस आरादा से निजात पाने के लिए सरकार ग्राम पंचायत को इकाई मानकर काम करें। छोटे स्तर पर जवाबदेही तय होने पर शिक्षा सहित किसी भी क्षेत्र में हादसे की संभावना कम होगी।

ग्राम पंचायत में जो धनराशि वार्षिक रूप से आवंटित की जाती है। उसके व्यय करने से पहले ग्राम

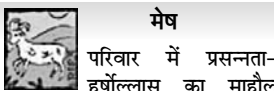
सही या संदिग्ध निष्ठा वाले सनातनी होने का प्रमाण पत्र जारी करा।यही कमेटी देश प्रेमी, राष्ट्रवादी होने या नहीं होने का भी सर्टिफिकेट जारी करे। अभी तो बड़ा कंप्यूजन है। हर कोई, हर जगह इस प्रकार के प्रमाण पत्र जारी करने को बेताब है। एक के द्वारा जारी प्रमाण पत्र दूसरा मान भी लें, नहीं भी मानें। तो फिर क्या होगा??

युवाओं का जवाब था, ऐसे प्रमाण पत्रों की तहसील, जिला, प्रदेश, राष्ट्रीय स्तर तक मान्यता हो, इसके लिए कोई केंद्रीय कमेटी होनी चाहिए। इसलिए सर्वोच्च धर्माचार्यों की उच्चस्तरीय कमेटी, नेशनल टेरिस्टिंग एजेंसी जैसी कोई एजेंसी बनाए जो राष्ट्रीय स्तर की मान्यता आवधि से, कोमें अधिक पुरानी है।" तब तक स्थानीय कमेटियां यह काम करें। किसी भी स्थानीय कमेटी द्वारा जारी प्रमाण पत्र कम से कम तहसील स्तर पर तो मान्य हो। वरना विभिन्न कमेटियों द्वारा जारी प्रमाण पत्रों में ही लड़ाई की आशंका रहेगी। उसे सुलझाने के लिए कोई नई कमेटी बनानी पड़ेगी।

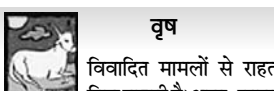
समझदार बुजुर्ग बंदे ने फिर समझाने का प्रयास किया कि विद्वानों का मानना है “मन में राम, रहीम हो तो, मंदिर मस्जिद सब बेमानी है। मस्जिद, मंदिर के अस्तित्व अवधि से, कोमें अधिक पुरानी है।” धर्मगुरु/ जगदगुरु (झगड़ गुरु !!!!!!!)/ पादर/ पोप/ लामा/ मौलवी/ जो भी ईश्वर के करीब होने का दावा करते है (कई तो अपने आप को ईश्वर के प्रतिनिधि ही कहते है) वो ?? केवल और केवल भ्रम फैलाते है। यह लोग और बहुत सारे पॉलिटीशियंस धार्मिक उन्माद से अपनी रेंटियां सेकते है।

वर्तमान में ऐसे उन्मादी, नफरती शब्दों, जुमलों, कार्यवाहियों को लेकर समाज में जैसा उदावना परिदृश्य बनता है उस पर एक साहित्य कर्मी ने लिखा है। “मुझे नहीं पता कि आज यदि संजय होते तो इन स्थितियों का वर्णन धृतराष्ट्र के सामने कैसे करते किंतु इस नफरती माहौल में संजय के लिए, ( जो केवल देख रहा था वहीं बता रहा था ) किसी ने क्या सटीक पंक्तियां कहा हैं”। वो खुले आम खोलता है खिडकियां सच की,चलो बचाएं उसे मार न डाले कोई ।”

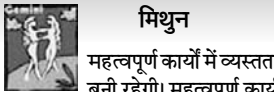
—महावीर सिंह, पूर्व आईएएस



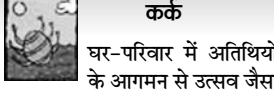
**परिवार** में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।



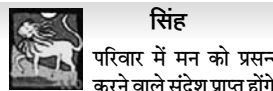
**विवादित** मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।



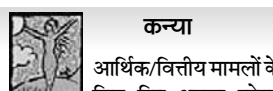
**महत्वपूर्ण** कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आज महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।



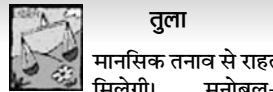
**घर-परिवार** में अतिथियों के आमनन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।



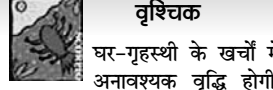
**परिवार** में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।



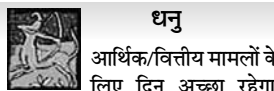
**आर्थिक**/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आज महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।



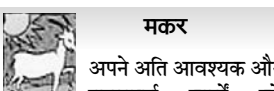
**मानसिक** तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल आत्मविश्वास बढ़ेगा। मन:स्थिति ठीक रहेगी। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।



**घर-गृहस्थी** के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। समय अनर्गल कार्यों में खर्च हो सकता है।



**आर्थिक**/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। सांभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।



**अपने** अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

